रघुवीर सहाय की कहानियों में समाज-बोध

(RAGHUVEER SAHAY KI KAHANIYON MEIN SAMAJ-BODH)

एम.फिल. हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध का सारांश

सत्र- 2014-15

शोधार्थी

पूनम कुमारी

पंजीयन संख्या : 2014/02/215/020

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट – हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442005 (महाराष्ट्र)

रघुवीर सहाय नई कहानी के महत्वपूर्ण कहानीकार हैं। वह अन्य कहानीकारों से बिल्कुल अलग दिखाई देते हैं। भाव-बोध की निर्मिति उनकी कहानियों में अपने समकालीन कहानीकारों से पर्याप्त भिन्नता लिए हुए है। रघुवीर सहाय ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध इत्यादि विभिन्न साहित्यिक विधाओं पर लेखन कार्य किया है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी था। रघुवीर सहाय के जीवन का आरंभिक चरण गाँव में बीता तो बाद का चरण महानगर दिल्ली और अन्य जगहों पर बीता है। रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसंबर, 1929 ई. को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके पिता का नाम श्री हरदेव सहाय और माता का नाम श्रीमति तारादेवी था। सन् 1944 ई. में इन्होंने मैट्रिक परीक्षा, सन् 1946 ई. में इंटर परीक्षा, सन् 1948 ई. में बी.ए. परीक्षा, सन् 1951 ई. में एम.ए. की परीक्षा पास की। एम.ए. उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से किया था। रघुवीर सहाय ने एक पत्रकार, कवि, कहानीकार, नाटककार इत्यादि की भूमिका समाज में निभाई है। रघुवीर सहाय बचपन से ही ज्ञानार्जन के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। उनकी ज्ञान अर्जित करने की इच्छा उन्हें बौद्धिक विमर्श एवं सामाजिक हलचलों के वातावरण में लेकर आ गई। रघुवीर सहाय ने अपना लेखन सन् 1946 ई. में एक कविता 'अंत का प्रारंभ' लिखकर शुरू किया था। उसके बाद उनका लेखन जीवनपर्यंत चलता ही रहा। 30 दिसंबर सन् 1990 को उनकी मृत्यु हो गई।

रघुवीर सहाय पर मार्क्सवाद, समाजवाद, हरिवंश राय बच्चन, गांधी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती इत्यादि महत्वपूर्ण लोगों का प्रभाव पड़ा। रघुवीर सहाय का पहला साहित्यिक संग्रह 'सीढ़ियों पर धूप में' (कहानी, कविताएँ, लेख) सन् 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात 'आत्महत्या के विरुद्ध' (काव्य संग्रह) सन् 1967 ई. में, 'रास्ता इधर से है' (कहानी संग्रह) सन् 1972 ई. में, 'हँसो, हँसो जल्दी हँसो (काव्य संग्रह) सन् 1975 ई. में, 'दिल्ली मेरा परदेश' (निबंध संग्रह) सन् 1976 ई. में,

‘लिखने का कारण’ (निबंध संग्रह) सन् 1978 ई. में, ‘लोग भूल गए हैं’ (काव्य संग्रह) सन् 1982 ई. में, ‘ऊबे हुए सुखी एवं वे और नहीं होंगे जो मारे जाएंगे’ (निबंध संग्रह) सन् 1983 ई. में, ‘यथार्थ यथास्थिति नहीं’ (निबंध संग्रह) सन् 1984 ई. में, ‘कुछ पते कुछ चिट्ठियां’ (काव्य संग्रह) सन् 1989 ई. में, ‘अर्थात्’ (निबंध संग्रह) सन् 1994 ई. में (मरणोपरांत), ‘एक समय था’ (काव्य संग्रह) सन् 1995 ई. में (मरणोपरांत) प्रकाशित हुए। रघुवीर सहाय की कहानियों में समाजबोध अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है।

रघुवीर सहाय ने समाज का बहुत ही गहराई से अध्ययन किया था। समाज के बारे में उनकी सोच या चिंतन बहुत विस्तृत थी। उनकी कहानियों में साधारण जन अर्थात् गरीब, मजदूर, किसान इत्यादि का महत्वपूर्ण स्थान है। एक आम आदमी को वह विशेष स्थान देते हैं। समाज में घटने वाली विभिन्न घटनाएँ, परिस्थितियाँ, आचार-विचार, व्यवहार, रहन-सहन इत्यादि सामाजिक चेतना को वह अपनी कहानियों मे माध्यम से बखूबी अभिव्यक्त करते हैं। भारत की आज़ादी के बाद जो नई पीढ़ी आई उसको उपहार स्वरूप बेकारी, भूख, कुंठा, घुटन, दर्द, बेचैनी इत्यादि मिली। जीवन के हर स्तर पर निराशा का अनुभव किया गया।

रघुवीर सहाय ने समाज का यथार्थ चित्रण किया है। समाज की विभिन्न परिस्थितियों को व्यक्ति के सामने लाने की पूरी चेष्टा रघुवीर सहाय ने अपनी कहानियों के माध्यम से की है। आज चाहे शहर हो या गाँव, हर स्तर पर समाज का विघटन देखा जा सकता है। सामाजिक जीवन में उच्च वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न वर्ग हैं। पूँजीपति वर्ग या उच्च वर्ग हमेशा स्वार्थ से घिरा हुआ रहा है। निम्न वर्ग व मध्यवर्ग हमेशा से शोषित रहा है। वह शोषण के कारण पीड़ित रहा है। सरकार द्वारा गरीब, मजदूर, शोषित जनता इत्यादि के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उचित प्रयास नहीं किए जा रहे है। जो प्रयास किए जा रहे हैं वह पूँजीपतिवर्ग

को सुख-सुविधाएँ देने के लिए ज्यादा किए जा रहे हैं। गरीबों के लिए किए गए प्रयास केवल कागज़ों तक ही सीमित रह जाता है।

सामाजिक विघटन के बहुत से कारण रहे हैं। उन कारणों में अत्यधिक भीड़-भाड़, आवास की समस्या, गंदी बस्तियों की समस्या, मानसिक विकृति, मद्यपान की समस्या, भिक्षावृति की समस्या, वेश्यावृत्ति की समस्या, अपराध और बाल अपराध इत्यादि की समस्याएँ रही हैं। थोड़े बहुत विकास या सुविधाओं से समाज का विकास नहीं किया जा सकता। आज का समाज भीड़ के रूप में घीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। इस भीड़-भाड़ वाले समाज में सबसे अधिक परिश्रम एवं श्रम, किसान को करना पड़ रहा है। वह दिनों दिन समाज के भीतर मरता जा रहा है। रघुवीर सहाय की कहानियों में समाज की विसंगतियों को उभारा गया है। बहुत से लोग मजदूरी कराके भी श्रमिक को उचित मजदूरी नहीं देते है। जनसंख्या बढ़ गई है आदमी को काम मिलना बहुत मुश्किल है। साधारण आदमी दिनों-दिन टूटता जा रहा है। उच्च वर्ग और निम्न वर्ग की दूरी लगातार बढ़ती ही जा रही है। समाज में कृषि की स्थिति बहुत खराब हो गई है। पुरुष प्रधान समाज में नारी के लिए कोई मूल्य नहीं रह गया है। नारी की महानता, करूणा और मर्यादा को नहीं देखा जा रहा है। उसका शोषण किया जा रहा है। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं जो समाज की परवाह नहीं कर रही है। बल्कि पारंपरिक समाज को तोड़ रही हैं। आज पुरुष के बिना भी नारी जीने को अभिशप्त है। नारी के साथ बर्ताव में बहुत ही कम फर्क देखने को मिलता है। आज नारी मुक्त होना चाहती है। उसका दैहिक और आर्थिक शोषण किया जा रहा है। भारतीय समाज में आज भी राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक विसंगतियाँ पाई जाती हैं। राजनीतिक दृष्टि से आज भी व्यक्ति के अधिकारों का हनन किया जा रहा है। आर्थिक दृष्टि से आज भी गरीब, मजदूरों का शोषण किया जा रहा है। धार्मिक दृष्टि से आज भी समाज में अंधविश्वास, बाह्य आडंबर मौजूद है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्ति आज भी कुंठा, घुटन एवं दर्द से ग्रस्त है।

सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो समाज आज भी पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। वह पाश्चात्य संस्कृति, उसके आचार-विचार में ही जीना चाहता है। रघुवीर सहाय की कहानियों में यह दिखाई देता है कि आज पारिवारिक संबंध बदल गए हैं। किसी के दुख से किसी भी व्यक्ति को कुछ लेना-देना नहीं है। रघुवीर सहाय ने समाज के मध्यवर्ग, निम्नवर्ग, गरीब मेहनतकश मजदूर इत्यादि को स्वतंत्र भारत में तिल-तिल मरते हुए देखा। लोगों की संवेदना को धीरे -धीरे खत्म होते हुए देखा। रघुवीर सहाय की वास्तविक चिंता आम आदमी के जीवन स्तर में सुधार को लेकर है। आम आदमी को समाज में स्थान मिल सके, उचित सम्मान मिल सके। वह गरीबी, जहालत और जीवन के निम्न स्तर पर जीने को मजबूर न हो, इसके लिए वह साहित्य और पत्रकारिता जगत में निरंतर संघर्ष करते रहे। यहाँ रघुवीर सहाय ने ऐसी स्त्री का चित्रण किया है जो अपने वस्त्र तक उतारने को विवश है। वह नाचने के साथ-साथ वस्त्र भी उतार सकती है। यह अत्यंत खेद जनक बात है। रघुवीर सहाय ने 'भूख' जैसी महत्वपूर्ण समस्या पर भी विचार किया है कि दो वक्त की रोटी के लिए व्यक्ति चोरी करने को मजबूर हो जाता है किंतु फिर भी उसे रोटी नहीं मिलती है। निम्न पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती हैं- ''वह भूखा प्राणी अभागा चोर आज खाली हाथ लौटा था।''[1] रघुवीर सहाय ने गरीबी का चित्रण किया है। गरीब व्यक्ति समाज में ठीक तरह से जी नहीं सकता। वह अपने बच्चों का पालन पोषण भी नहीं कर सकता और न ही अपने बच्चों की ठीक तरह से शादी (विवाह) कर सकता है। इस तथ्य को निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है- ''किसी शहर में एक सीधा-साधा गरीब आदमी रहता था। उसके एक लड़का और सात लड़कियाँ थीं और लड़का नालायक था, लड़कियाँ सातों बिन ब्याही बैठी थीं।''[2]

रघुवीर सहाय की कहानियों में समाज के भीतर यांत्रिकता आ चुकी है इसका भी जिक्र है। निम्न पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती हैं- ''एक भारी आसमान खेत पर

[1] शर्मा, सुरेश. रघुवीर सहाय रचनावली. खंड-02.पृ॰ 33

[2] शर्मा, सुरेश. रघुवीर सहाय रचनावली. खंड-02.पृ॰ 48

पॉटरी-वक्स की चिमनियों के सहारे खड़ा हुआ था.... कुछ सूखी जमीन के एक ऊँचे टुकड़े पर दो नन्हें-नन्हें जूते रखे हुए थे।''[3] आम आदमी, रिक्शा चालक, बच्चे, बूढ़े स्त्रियाँ इत्यादि सभी पूँजीवादी शक्तियों के शोषण के शिकार हैं। शासन वर्ग भी पूँजीवादी वर्ग से मिला हुआ है। रघुवीर सहाय सामाजिक स्तर पर लोगों में समझ और संगठन विकसित करना चाहते हैं। उनका मानना है कि अपराध संगठित है, राजनीति संगठित है लेकिन सत्ता के विरूद्ध बोलने वाला व्यक्ति अकेला है। वह इस अकेले समाज में मर-मरकर जी रहा है। उसे संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने की जरूरत है। रघुवीर सहाय का बोध समाज सापेक्ष था। यह समाज सापेक्ष अभिव्यक्ति परोक्ष नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से थी। उन्होंने समाज बोध के अन्तर्गत आजादी और मोहभंग, व्यवस्था की क्रूरता, भ्रष्ट सरकारी अफसर, विकृत न्याय व्यवस्था, हताशा एवं विवशता इत्यादि का चित्रण किया है। रघुवीर सहाय ने स्त्रियों की दशा को लेकर बहुत ही गंभीर कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने नारी की बेबसी और लाचारी को समाज के सामने दिखाया है। सामंती युग में स्त्री विलास की वस्तु समझी जाती थी। आज भी कुछ वैसा ही है। रघुवीर सहाय किसी 'होटल' में ठहरे हुए थे। वहाँ स्त्री की दशा का चित्रण निम्न पंक्तियों में करते हैं ''उस शहर में मुझे सिर्फ तीन दिन रहना था..... मेहरबानी करके कपड़े पहने रहो, मैं उससे कहना चाहता था, ऐसे ही गनीमत है।''[4] इस प्रकार रघुवीर सहाय की कहानियो में जातिगत, धर्मगत, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि अनेक समस्याओं का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। रघुवीर सहाय की कहानियाँ सामाजिक घुटन, गिरते जीवन मूल्य के प्रति सामाजिक चेतना को जागृत करना चाहती हैं। उनकी कहानियाँ समाज की समस्याओं को अभिव्यक्त करने के लिए एक नया शिल्प लाती हैं, उनकी कहानियाँ एक लेख अथवा निबंध अधिक लगती हैं। कहानियों में कथानक का निर्वाह भी कम दिखाई देता है। उनकी कहानियों में उचित शब्दों का प्रयोग किया गया है।

---

[3] शर्मा, सुरेश. रघुवीर सहाय रचनावली. खंड-02.पृ॰ 66

[4] शर्मा, सुरेश. रघुवीर सहाय रचनावली. खंड-02.पृ॰ 120

आम बोल-चाल की भाषा में उनका समाजबोध विस्तृत है। उनका जीवन समाज सेवा के लिए ही समर्पित रहा है। सामाजिक असमानताओं के खिलाफ उन्होंने समाज में चेतना जागृत की है। वह चाहते हैं कि समाज में व्यक्ति को उसके अधिकार मिलें। गरीब और मजदूर तथा दलित वर्ग के लोगों पर अत्याचार न किया जाए। उनका शोषण न किया जाए। वह भी इसी समाज के अंग हैं। इसी देश के नागरिक हैं। उन पर दया करके उन्हें न्याय, समानता इत्यादि न दिया जाए बल्कि यह उनका जन्म सिद्ध अधिकार है| उन्हें उनका अधिकार दिया जाए। समाज में मानवीय संबंधों को बरकरार रखा जाए। रघुवीर सहाय समाज में मुक्ति के लिए क्षण की बात नहीं करते बल्कि संपूर्ण मुक्ति की बात करते हैं। वह चाहते हैं कि कोई भी व्यक्ति दो वक्त की रोटी के लिए भूखा न मरे। समाज में चेतना जागृति की लहर फैले और समाज सत्ता वर्ग, पूँजीवादी वर्ग के प्रति सचेत होकर विकास की ओर अग्रसर हो।

अतः प्रस्तुत शोध विषय **'रघुवीर सहाय की कहानियों में बोध'** में रघुवीर सहाय की कहानियों के माध्यम से रघुवीर सहाय के समाज बोध का विवेचन-विश्लेषण किया गया है और पाया गया है कि उनकी दृष्टि समाज सापेक्ष है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में सामाजिक परिवेश ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रघुवीर सहाय की वैचारिक दृष्टि और समाज में व्यक्ति को घुट-घुट कर मरते हुए तथा बहुत ही निम्न स्तर पर जीवन का निर्वाह करते हुए देखती है। समाजबोध के अंतर्गत उन्होंने पाया कि भारतीय समाज की संरचना परिवर्तनशील होनी चाहिए जो कि आज अपने स्थिर रूप में मौजूद दिखाई देती है। उपभोक्तावादी समाज में मनुष्य गरीबी, बेरोजगारी, असुरक्षा, अशिक्षा इत्यादि में जीने को विवश है। रघुवीर सहाय का समाज संघर्षरत है जो अपनी भाषा में अभिव्यक्ति होकर नए समाज का निर्माण करना चाहता है।

RESEARCH REVIEW :

RAGHUVEER SAHAI KI KAHANIYON MEIN SAMAAJBODH

(SOCIETYSENSE IN STORIES OF RAGHUVEER SAHAI)

Raghuveer Sahai is a very important story writer of new story. He is a diffirent from other story writers. Construction of feelings in his story are defirent from other story writers. Raghuveer sahai wrote poetry, story, novel, play etc. his attitude and creativity was wide dimension. Raghuveer sahai spend his begning life (early life) around the village and ending life around the big cities like delhi and other places. Raghuveer sahai was born on 9 december in 1929 at lucknow in uttar prdesh. His father name was mr. Hardev sahai and mother name was mrs. taradevi. In 1944 he passed metric(xth) and in 1946 he passed inter(xiith)beside in 1948 he passed . B.A and in 1951 he passed M. A. He passed M.A from lucknow university. Raghuveer sahai had done his role in journalist, poet, story writers, play writer for socity. raghuveer sahai wanted more knowledge from his starting life. His wish of earning knowledge went to intellectual discourse and society environment. Raghuveer sahai started his poet life or writers life in 1946 from wrote a poetry “ant ka prarambh”. then his writers life continuesly do for long life. He died on 30 December in 1990. Raghuveer sahai was attrect from thought of marxsvaad, socialism, Harivansraibachchan, Gandhi, Ramkrishan paramhans, Swami Vivekanand, Dayanand sarawati etc .Raghuveer sahai first literature creation was “seedhiyon per dhoop mein”

(stories, poetries, article) published in 1960 then atamhattya ke virudh (poetry collection) published in 1967. “Rasta idhar se hai” (Story collection) Published in 1972. “Hanso hanso jaldi hanso” (Poetry collection) Published in 1975, “Likhne ka karan” (Essay collection) published in 1978, ”Log Bhool gayein hain” (poetry callection) published in 1982. “ubey hueiy sukhi avam” veiyaur nahi hongey jo marey jayeingi” (essay coolction) published in 1983. “Yatharth yatha insthitee nahi” (easy collection) published in 1984. Kuchh pate kuchh chithiyaan (poetry collection) published in 1989 “Arthart” essay collection published in 1994 (after death). Ek samay tha (poetry collection) published in 1995 (afterdeath).

Society knowledge or sense in raghuveer sahai stories is very important subject Raghuveer sahai had done deeply study of society. His thought was wide about the society. Common man means labour, farmer are very important in his stories. He keeps very important in his stories. He keeps very special place for common man. He expressed as a different incident situation. Code and conduct behavior living life etc. social sense in his society by medium of stories . After independence. New generation has come with have a gift of unemployment. Hunger, frustration, pain, unconsious etc every stage of life felt unhopeful. Raghuveer sahai expressed his deep faith of reality of society. He come out of different environment of society to every person by his stories. Today in city or village every stage are seeing fall of society. In social life are higher class, middle class, low class. Capitalist society or higher class always with full of selfish. Low class and middle class are under power of capitalist. He is suffering pain due to under the power of capitalist.

The government is not doing proper efforts to make high status of poor, laborer and suffered people and whatever the efforts which government is doing those

are more beneficial for rich persons. The efforts for the poor peple are limited only in papers. There are many reasons of breaking our society. In this there are many reason like – Problem of crowd problem of residency problem of dirty areas mental disease, problem of dringking problem of begging problem of prostitution, crime etc. we can not develop society with so less serives. Today's society is doing progress in a shape of crowd. In this crowdy society, a labourer and a farmer etc. has to do the hardest work. He is dying under this society day by day. In the stories of raghuveer sahai these vicls of society are shown. There are many person in the society who are taking work from labouers but are not providing proper pay for their work the population has increased and it is 700 typical to gain profit to common men is loosing his temper and potiencial day by day. The distance between high society and low society is increasing day by day. The condition of agriculture has become too wrong in the society. Today the women is struggling for he rights. If the man based society there is no cost or status of a woman. Non is seeing the greatness, paint and shame of women. There are some women who are not careful for the society but they are breaking cultural society. Today a woman is ready to live without mom. People not changed their behavior towards. Today the women wants to free. He is suffered with mental and physical. Pains. Even today there are many views related to political economical, religious, philosophical and cultured in Indian society. According to political view even today the people are not getting their rights. According to economic view ever to day people are not getting their rights. According to religious view even today there is showoff and orthodox in society accoding to psychological view even today the man is suffering from suffocation. Paint and jealousy according to cultured view ever today the society is suffering from western of western culture. In the stories of raghuveer sahai it is seen that family terms have changed today. No one is interested in anyone's sadness.

Raghuveer sahai saw middle, lower, poor laborious person of society dying in free india. He saw to finish the feelings of the people very slowly. The rad problem of raghuveers sahai is for reformation in the life of common people so that the common man can get the plece and respect in society. He should not be forced to lead life of poverty, ignorance and lower part of life. For this he struggled in literature and journalism area. Commonman, rickshaw-wala, children, old men, women etc all are under the power of rich persons. Political department also mingled with rich persons. Raghuveer shai wants to develop the understanding and unity in the people of society. He follows that crime is unity, politics is in unity but that person is lonely who is speaking against kingdom. He is living as adying person in the society lonely. He will have to fight for his right with unity. Sense of raghuveer sahai with society his expressed sence was not indirect but direct. In his sense of society he show broken independence. Rute of administration, corrupted government etc. raghuveer has written very serious stories about the condition of women. He has shown the helpnesss of women in the society in era the women was a thing of sexuality only. Today the condition is like that in a litil he has written the following lines for women. “I have to live in that city for only three days… please remain to wear clothing, I wanted to say to him, it is English”1 .Here raghuveer sahai has depicted such kind of a lady who is forced to put off her clothes. She can wear out clothing instead of dancing. This is very sorrowful thing. Raghuveer sahai has thought about the important problem of hunger.

Depicted that the man is forced or helpless to steal for bread of two times. But ever then he is not getting bread. The following lines are in this matter –

“That hungry person, helpless thief came to home back with blank Handed. ”2

Raghuveer sahai has depicted about poorness. Poor man can not live in a proper way in society. He cannot bring up his children and also cannot marry his children properly. This fact we can see in following lines –

“There was a simple and poor man in some city he. He has one son and seven daughters and the son was very nonsense and all the girls were unmarried. ”3

I the stories of raghuveer sahai mechanism has come in the society which is also described in the following lines.

“One heavy sky was standing near the climness of pottery work in the filed. There were kept two little shoes on a dry land pieace. ”4

Thus in the stories of Raghuveer Sahai it is Described and analyzed about the problems of castism, religiousism, economic, political and culture etc. The stories of raghuveer sahai shows social suffocation, low life –cost. His stories shows a new way to show the problems of the society. His stories are essays etc. The participation of plot is less in the stories of raghuveer sahai. He has used proper wordings in stories. He has vide society sense in common language. His life is dedicated for social service. He has appeared thinking in the in the society against social in equality. He wants that a person should get his right in the society. The poor labourers and low part people should not be bothered. They should not be under controlled they also are part of this society. They are citizen of this country. They should not be given justice and equality by showing pity towards them but this is their birth right and they should get ther right. There should be remained human – relationship in the society. raghuveer sahai is not talking about the freedom of only one second.

But they are talking about full freedom he wants that no person should be starved for the bread of tow time. There should be a wave of awareness in the society and the society should go ahead toward development to be aware for political group and the rich.

So this conclusion has been analyzed and described in the stories of raghuveer sahai by ‘’Social –reform in stories of raghuveer sahai’’

And it is found that his sight is for society. Social environment has played an important role in his personality and action. The thoughtful sight of raghuveer sahai sees the persons dying and spending low life in the society.

In social reform he found that there should be convertible the structure of Indian society which is seen now in its stopping structure. In consumerism society the person is forced to live in poverty, unemployment, the society of raghvveer sahai is struggler who wants to make a new society involving, in its language.

References:

(1) Sahai, raghuveer, kiley mein aurat:raghuveer sahai rachnawali- volume-2, page 120, edited by suresh sharma, rajkamal prakashan, new delhi edition: 2000

(2) Sahai, raghuveer, aadhi raat ka tara :raghuveer sahai rachnawali- volume-2, page-33 edited by suresh sharma, rajkamal prakashan, new delhi-edition:2000

(3) Sahai, raghuveer, kahani ki kala:raghuveer sahai rachnawali, volume-2, page no-48 edited by suresh sharma, rajkamal prakashan, new delhi, edition:2000

(4) Sahai, raghuveer, umas ke bahar: raghuveer sahai rachnawali, volume-2, page-66 edited by suresh sharma, rajkamal prakashan, new delhi, edition-2000